नवभारत

| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

पर्यावरण संरक्षण के लिए प्लास्टिक का त्याग जरूरी

बुधवार को अंतर्राष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस मनाया गया. जाहिर है इस दिन प्लास्टिक मुक्त जीवन का संकल्प लिया गया. यह संकल्प केवल एक दिन का कर्मकांड ना बनें इसका ध्यान रखने की जरूरत है. दरअसल, हमें ठहरकर उस 'प्लास्टिक से सुविधा' पर विचार करना चाहिए, जो अब एक वैश्विक आपदा का रूप ले चुकी है. कभी उपभोक्ता के जीवन को आसान बनाने के उद्देश्य से जन्मा प्लास्टिक बैग, अब हमारे पर्यावरण, जैव विविधता और सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए एक मूक, मगर घातक खतरा बन चुका है.

प्लास्टिक बैग का इतिहास 1960 के दशक में स्वीडन में शुरू हुआ, जब लोप्लास्ट कंपनी ने एक सस्ता, हल्का और टिकाऊ विकल्प प्रस्तुत किया. आरंभ में इसे कागज़ के थैलों का 'पर्यावरण-संवेदनशील' विकल्प माना गया. किंतु आज, प्रति वर्ष 50 खरब से अधिक प्लास्टिक बैग्स का वैश्विक उपभोग, और उनमें से मात्र 1-3 फीसदी की रीसाइक्लिंग, एक भयानक असंतुलन को जन्म दे रहे हैं.

चौंकाने वाली बात यह है कि एक प्लास्टिक बैग औसतन सिर्फ 12 मिनट उपयोग में आता है, लेकिन 500 वर्षों तक पृथ्वी पर बना रह सकता है. शेष बैग्स लैंडफिल में सड़ते हैं, नदियों में बहते हैं, और अंततः समुद्रों में पहुंचकर समुद्री जीवन के लिए घातक जाल बन जाते हैं. संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार, हर वर्ष लगभग 10 लाख समुद्री जीव प्लास्टिक निगलने या उसमें उलझने के कारण अपनी जान गंवाते हैं. भारत में यह संकट और भी विकराल है. महानगरों की नालियाँ प्लास्टिक कचरे से भर जाती हैं, जिससे हर वर्ष मानसून में जलभराव और बाढ़ की स्थितियां बनती हैं. ग्रामीण अंचलों में खेतों की मिट्टी प्लास्टिक बैग्स के कारण अपनी प्राकृतिक उर्वरता खो रही है. सूर्य के संपर्क में आकर जब ये बैग्स माइक्रोप्लास्टिक में परिवर्तित होते हैं, तो वे खाद्य श्रृंखला में प्रवेश कर हमारे स्वास्थ्य के लिए अदृश्य विष बन जाते हैं.यह संकट केवल पर्यावरण या स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है. यह हमारे आर्थिक संसाधनों पर भी अत्यधिक दबाव डालता है. कचरा प्रबंधन, नालियों की सफाई और प्रदूषण नियंत्रण पर सरकारों को हर वर्ष अरबों रुपये खर्च करने पड़ते हैं. वहीं यदि हम जूट, कपड़े या अन्य टिकाऊ विकल्पों को प्रोत्साहित करें, तो न केवल पर्यावरण का संरक्षण संभव है, बल्कि स्थानीय कारीगरों और सूक्ष्म उद्यमों को भी नया जीवन मिल सकता है.

दुनिया भर में इस दिशा में नीतिगत पहल हो रही है. बांग्लादेश, कनाडा, केन्या जैसे देशों ने सिंगल-यूज़ प्लास्टिक पर सख्त प्रतिबंध लगाए हैं. भारत ने भी 2022 से ऐसे प्लास्टिक पर प्रतिबंध लागू किया है, किंतु इसके प्रभावी क्रियान्वयन की आवश्यकता आज भी शिद्दत से महसूस की जाती है. इसलिए यह समय केवल सरकारी आदेशों की प्रतीक्षा करने का नहीं, व्यक्तिगत जिम्मेदारी निभाने का है. हमें चाहिए कि हम स्वेच्छा से प्लास्टिक बैग्स का प्रयोग त्यागें, अपने साथ कपड़े या जूट के थैले रखें, दुकानदारों को प्रोत्साहित करें कि वे वैकल्पिक पैकेजिंग अपनाएं, और अपने समाज को जागरूक करें. स्कूलों, समाजों और ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म्स पर जागरूकता अभियानों की नितांत आवश्यकता है.

आखिरकार, एक स्वच्छ और सुरक्षित भविष्य की नींव हमारे आज के छोटे-छोटे फैसलों पर निर्भर करती है. क्या हम अपनी सुविधा की आदत पर पुनर्विचार करने और पृथ्वी के प्रति अपने उत्तरदायित्व को स्वीकारने के लिए तैयार हैं? यदि हां, तो यह बदलाव यहीं से, अभी से शुरू किया जा सकता है.यह समय है—सुविधा से ज़िम्मेदारी की ओर बढ़ने का.

ग्वालियर चंबल की डायरी

प्रदेश प्रधानी : नरोत्तम, अरविंद और लालसिंह की पूरी नहीं हुई आस

हरीश दुबे

मध्यप्रदेश भाजपा के अध्यक्ष पद के लिए चंबल अंचल से तीन कद्दावर नेता डॉ. नरोत्तम मिश्रा, अरविंद भदौरिया एवं लालसिंह आर्य भी स्पर्धा में थे. राष्ट्रीय और प्रदेश की राजनीति में इनके पैरोकार रहे नेताओं ने खूब जोर भी लगाया लेकिन पार्टी ने चंबल के नेताओं के बजाए कुशाभाऊ ठाकरे ट्रस्ट के अध्यक्ष बैतूल के हेमंत खंडेलवाल की नेतृत्व क्षमताओं पर यकीन करना ज्यादा ठीक समझा. चंबल से दावेदारी कर रहे नरोत्तम, अरविंद और लालसिंह तीनों ही 2023 के हारे हुए विधायक हैं और ये तीनों ही तत्कालीन शिवराज सरकार में कई कई बार वजनदार महकमों के मंत्री रह चुके हैं. बहरहाल, लालसिंह इस वक्त भाजपा अजा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में बड़ी जिम्मेदारी संभाल रहे हैं लेकिन नरोत्तम और अरविंद भदौरिया को अपने राजनीतिक पुनर्वास का इंतजार है.

ऑपरेशन लोटस के जरिए कमलनाथ सरकार को गिराकर शिवराज सिंह को फिर से सीएम की कुर्सी तक पहुंचाने में नरोत्तम और अरविंद, दोनों ही पूर्व मंत्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी, जिसका पारितोष उन्हें मंत्रिमण्डल में वजनदार महकमे सौंपकर दिया गया था लेकिन 23 का चुनाव उनके लिए राजनीतिक दु;स्वप्न साबित हुआ. मंत्री के अलावा प्रदेश सरकार के प्रवक्ता और 23 के चुनाव में अन्य दलों के कद्दावर नेताओं को भाजपा में लाने का अभियान संभाल चुके नरोत्तम का नाम विगत दो बार से राज्यसभा की उम्मीदवारी के लिए भी चलता रहा लेकिन हर बार कोई न कोई ऐसा समीकरण बन जाता है कि नरोत्तम का नाम कट जाता है. इस बार भी ऐसा ही हुआ. दो दिन पहले तक प्रदेश अध्यक्ष पद के दावेदारों के क्रम में उनका नाम शीर्ष पर चल रहा था, अग्रिम बधाईयां प्राप्त होना भी शुरू हो गई थी लेकिन उनके साथ फिर राज्यसभा चुनाव वाली कहानी दोहराई गई. वे गृह मंत्री अमित शाह की गुडबुक में हैं. शाह एक मर्तबा उनके भोपाल

बंगले पर भी आ चुके हैं, पीतांबरा नगरी के दादा पूरी प्रतिबद्धता के साथ संघम गच्छामि भी हैं तो आखिर ऐसा कौन सा मापदंड है, जिसे नरोत्तम पूरा नहीं कर पा रहे हैं!

प्रदेश की राजनीति के विश्लेषक इसी सवाल का जवाब तलाशने में जुटे हैं. वैसे मप्र भाजपा का अध्यक्ष पद ग्वालियर चंबल के खाते में जाता रहा है, नरेंद्र सिंह तोमर कई बार अध्यक्ष रहे तो ग्वालियर के ही स्व. प्रभात झा को भी यह सौभाग्य मिल चुका है. निवर्तमान अध्यक्ष वीडी शर्मा भी ग्वालियर मुरैना के ही बाशिंदे हैं. बहरहाल, ग्वालियर के खाते में एक बार फिर से प्रधानी आने का कुछ नेताओं को ख्वाब पूरा नहीं हो सका लेकिन ग्वालियर भाजपा का नेतृत्व हेमंत खंडेलवाल की ताजपोशी से खुश है, जिस गर्मजोशी से जश्न मना, उससे यह जाहिर भी होता है.

खत महापौर को, निशाना कहीं और

महान ओलंपियन कै. रूपसिंह के नाम पर बने ग्वालियर के अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम को लेकर भाजपा में रार और तकरार शुरूहो गई है. सांसद, महापौर और जीडीए के चेयरमैन रह चुके विवेक शेजवलकर इस स्टेडियम को एक बार फिर जीडीसीए को लीज पर दिए जाने से नाराज हैं. उनका कहना है कि जीडीसीए ने जब करोड़ों की लागत से शहर के बाहर शंकरपुर में अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम बना लिया है और वहां अंतर्राष्ट्रीय मैच और एमपीएल हो भी चुके हैं तो फिर जीडीसीए को नगर निगम के स्वामित्व वाला यह पुराना स्टेडियम लीज पर क्यों दिया जा रहा है! ग्वालियर में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैच कराने वाली संस्था जीडीसीए सीधे तौर पर महल से निर्देशित होती है. शेजवलकर ने नाराजगी भरा खत तो मेयर को लिखा है लेकिन निशाना किस तरफ है, जानकार समझ गए.

सतीश ने प्रदेश प्रभारी को दिखाई ताकत

अम्बेडकर प्रतिमा के समर्थन में कांग्रेस के उपवास कार्यक्रम में शरीक होने आए प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी को विधायक सतीश सिकरवार ने अपनी ताकत दिखा दी. सतीश ने उपवास कार्यक्रम में भीड़ तो जोड़ी ही, दूसरे रोज चौधरी के सम्मान में अपने जनसंपर्क कार्यालय पर दोपहर भोज के साथ बड़ी बैठक भी रख दी. इसी बीच आपातकाल की मौजूदा वक्त में जरूरत बताने का विधायक महोदय का एक बयान भी सोशल साइट्स पर वायरल होता रहा.

बाल विकास में तकनीकी परिवर्तन का एक दशक

अन्नपूर्णा देवी

> यह नया भारत है – जहाँ शासन प्रौद्योगिकी से मिलता है, और जहाँ नीति उद्देश्य से मिलती है. पिछले दशक में, माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के ओजस्वी नेतृत्व में, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने न केवल डिजिटल परिवर्तन को अपनाया है – बल्कि इसका समर्थन भी किया है. जैसे-जैसे हम अमृत काल में आगे बढ़ रहे हैं, मंत्रालय प्रत्येक महिला और प्रत्येक बच्चे का राष्ट्र निर्माण में भागीदार बनना सुनिश्चित करते हुए आगे बढ़कर नेतृत्व करना जारी रखेगा. प्रौद्योगिकी, पारदर्शिता और लक्षित कार्रवाई के माध्यम से, हम एक ऐसे भविष्य का निर्माण कर रहे हैं जहाँ सशक्तिकरण महज नारा भर नहीं है – बल्कि प्रत्येक भारतीय के लिए वास्तविकता है.

सशक्तिकरण की शुरुआत पहुँच -अधिकारों, सेवाओं, सुरक्षा और अवसरों तक पहुँच से होती है. बीते दशक में, अधिक समावेशी और डिजिटल रूप से सशक्त भारत का निर्माण करने पर केंद्रित मोदी सरकार की प्रतिबद्धता के माध्यम से इस पहुँच को नए सिरे से परिभाषित किया गया है और सभी के लिए सुलभ बनाया गया है. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय इस परिवर्तन में सबसे अग्रणी रहा है. माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत @2047 के विजन से निर्देशित, मंत्रालय ने लाभ को अंतिम छोर तक त्वरित, पारदर्शी और कुशल तरीके से पहुँचाना सुनिश्चित करने के लिए अपने कार्यक्रमों में प्रौद्योगिकी को व्यवस्थित रूप से एकीकृत किया है.

हम अक्सर कहते हैं- सशक्त महिलाएँ, सशक्त भारत. और सशक्तिकरण की शुरुआत पहुँच - अधिकारों, सेवाओं, सुरक्षा और अवसरों तक पहुँच से होनी चाहिए. आज, यह पहुँच तेज़ी से डिजिटल होती जा रही है. जो कभी आकांक्षापूर्ण था, वह अब क्रियाशील बन चुका है -ऐसा सरकार द्वारा डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना, रियल-टाइम डेटा सिस्टम और उत्तरदायी शासन पर ज़ोर दिए जाने की बदौलत संभव हुआ है.

मंत्रालय ने देखरेख, संरक्षण और सशक्तीकरण पर दृढ़ता से ध्यान केंद्रित करते हुए - पोषण, शिक्षा, कानूनी सुरक्षा और आवश्यक अधिकारों तक पहुँच को मजबूत किया है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि महिलाएं और बच्चे न केवल अधिक स्वस्थ, अधिक सुरक्षित जीवन जी सकें, बल्कि वे आत्मविश्वासी नेतृत्वकर्ता और अमृत काल के परिवर्तनकर्ता के रूप में भी उभर सकें. जैसा कि माननीय प्रधानमंत्री ने बहुत सटीक रूप से कहा है, मैं प्रौद्योगिकी को सशक्त बनाने के साधन के रूप में तथा आशा और अवसर के बीच की दूरी को पाटने वाले उपकरण के रूप में देखता हूँ. इस लोकाचार ने मैनुअल प्रक्रियाओं से लेकर रियल-टाइम डैशबोर्ड तक, असंबद्ध योजनाओं से लेकर एकीकृत प्लेटफार्मों तक हमारे परिवर्तन का मार्गदर्शन किया है.

इस परिवर्तन की आधारशिला सक्षम आंगनवाड़ी पहल है. भारत भर में 2 लाख से ज़्यादा आंगनवाड़ी केंद्रों को आधुनिक और सशक्त बनाने के लिए निरुपित यह कार्यक्रम बाल्यावस्था देखरेख और विकास की अगली पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है. पोषण, स्वास्थ्य सेवा और पूर्व-विद्यालयी शिक्षा सेवाओं की ज़्यादा प्रभावी प्रदायगी संभव बनाते हुए इन केंद्रों को स्मार्ट इंफ्रास्ट्रक्चर, डिजिटल डिवाइस और नए-नए लर्निंग टूल्स के साथ अपग्रेड किया जा रहा है. देश भर में 14 लाख आंगनवाड़ी केंद्रों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं को पोषण ट्रैकर के साथ एकीकृत करने से रियल-टाइम डेटा एंट्री, कार्य निष्पादन की निगरानी और साक्ष्य-आधारित नीतिगत हस्तक्षेप संभव हो पाया है. आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को स्मार्टफोन और व्यापक प्रशिक्षण से लैस करके, यह पहल अंतिम छोर तक गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदायगी सुनिश्चित करती है. यह 2014 से पहले मौजूद मैनुअल रिकॉर्ड-कीपिंग और डेटा ब्लाइंड स्पॉट से एक निर्णायक बदलाव का प्रतीक है. एक दशक पहले, आईसीडीएस प्रणाली असंबद्ध डेटा, विलंबित प्रतिक्रियाओं और रियल-टाइम ट्रैकिंग की कमी से दबी हुई थी. पोषण ट्रैकर ने - पोषण सेवा प्रदायगी में सटीकता, दक्षता और जवाबदेही की शुरुआत कर इस परिदृश्य को बदल दिया है.

10.14 करोड़ से ज़्यादा लाभार्थी अब इस प्लेटफॉर्म पर पंजीकृत हैं- जिनमें गर्भवती महिलाएँ, स्तनपान कराने वाली माताएँ, छह साल से कम उम्र के बच्चे और किशोरियाँ शामिल हैं. यह प्लेटफॉर्म विकास की निगरानी और पूरक पोषण प्रदायगी पर रियल-टाइम अपडेट को सक्षम बनाते हुए समय पर हस्तक्षेप और साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण सुनिश्चित करता है. डिजिटल रूप से सशक्त सामुदायिक केंद्रों के रूप में आंगनवाड़ी केंद्रों की नए सिरे से परिकल्पना कर, शहरी-ग्रामीण विभाजन को पाटते हुए-पोषण ट्रैकर महत्वपूर्ण रूप से स्वस्थ भारत, सुपोषित भारत के राष्ट्रीय विजन को आगे बढ़ा रहा है.

-लेखिका केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री हैं.

कांवड़ यात्रा में नाम बताने से परहेज क्यों?

उत्तर प्रदेश सरकार ने कांवड़ यात्रा के दौरान अपने प्रतिष्ठानों पर दुकान संचालकों का नाम प्रमुखता से प्रदर्शित करने का निर्देश दिया है. यह आदेश उन दुकानदारों के लिए है, जो कांवड़ यात्रा मार्ग पर रोजगार करते हैं. कांवड़ यात्रा 11 जुलाई से आरंभ होगी. गत वर्ष भी कांवड़ यात्रा के दौरान नाम लिखने को कहा गया था, तो उसका जमकर विरोध हुआ था. इसे मजहबी राजनीति से जोड़ा गया था. कहा जा रहा है कि इस तरह के आदेशों से रोजगार करने वालों पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा. जो लोग भंडारे लगाते हैं या फिर शिवभक्तों की सेवा आदि करते हैं, वह भी प्रभावित होंगे. यह प्रश्न प्रमुखता से उठाया जा रहा है कि आखिर नाम बताने या अपनी पहचान जाहिर करके रोजगार करने में बुराई क्या है? इस आदेश के पीछे मंशा है कि कांवड़ यात्रा के दौरान असामजिक तत्व नाम बदलकर कोई ऐसा काम नहीं करें, जिससे सांप्रदायिक तनाव भड़के. सावन माह के आते ही हिंदुओं के त्योहार आरंभ हो जाते हैं. इनमें कांवड़ यात्रा, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी और गणेश चतुर्थी का पर्व खास महत्व रखता है.

कांवड़ यात्रा के दौरान जगह-जगह लगने वाले भंडारे ऐसे होते हैं, जिन पर कांवड़ियों के साथ ही आम यात्री भी प्रसादी ग्रहण करते हैं. इस मार्ग पर जो दुकानें हैं, उनसे भी आम जरूरत का सामान खरीदा जाता है जैसे बिना प्याज-लहसुन का भोजन. शुद्धता-शुचिता के लिए और धार्मिक भावना को ध्यान में रखने के लिए यदि नाम पूछा जा रहा है तो बुराई क्या है? ऐसे में यदि दुकानदार अपनी दुकान पर अपना नाम प्रमुखता से प्रदर्शित करता है, तो इसमें गलत क्या है? विरोध करने की वजह क्या हो सकती है? जहां तक पहचान छिपाने की बात है तो इसे छिपाकर रोजगार करने वाले यह बात अच्छे से समझ लें कि अब पहचान छिपाना बहुत मुश्किल हो गया है. किसी भी स्थान पर चले जाइए, यदि वहां पर इंटरनेट काम करता है, मोबाइल रनिंग में है तो तय है कि वस्तु के दाम सीधे बैंक में लेने के लिए पेटीएम या फोन पे, भीम ऐप जैसी सुविधाएं हैं और इन पर पेमेंट करने के बाद आप असली नाम जान सकते हैं. इन स्थितियों को देखते हुए दुकानदार को नाम प्रदर्शित करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

27वें प्रयास में 12वीं पास करने की धुन पीएचडी धारक सरपंच का मन

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, चाहे कितने ही बार असफल हो जाओ, प्रयत्न करना मत छोड़ो. ट्राई-ट्राई अगेन! कभी न कभी सफलता तुम्हारे कदम चूमेगी. गुजरात के नवसारी जिले के तलोध गांव के सरपंच नील देसाई 26 बार 12वीं की परीक्षा में फेल हो चुके हैं. उनकी उम्र 52 साल हो चुकी है, लेकिन फिर भी बार-बार परीक्षा देकर 12वीं पास करने की कोशिशों में जुटे हैं.

हमने कहा, कहावत है- बूढ़े तोते क्या राम-राम पढ़ेंगे ! जब नौजवान थे, तब 12वीं पास नहीं कर पाएं, अब प्रौढ़ावस्था में कौन-सा तीर मारेंगे? क्या उन्हें बच्चों के साथ बैठकर 12वीं का इम्तेहान देने में शर्म नहीं आती? दिमाग नहीं चलता इसीलिए तो 26 बार अपीयर होकर भी 12वीं पास नहीं कर पाएं. हमें तो वह मंदमति या जड़मति मालूम पड़ते हैं.

पड़ोसी ने कहा, यह आपकी गलतफहमी है निशानेबाज! पहले तो कहावत है- करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान, रस्सी आवत-जात के सिल पर पड़त निशान ! इसका अर्थ है कि कुएं से पानी खींचते समय रस्सी की रगड़ से पत्थर पर भी निशान पड़ जाता है. ऐसे ही प्रयत्न करने से मंद बुद्धि वाला भी ज्ञानी बन जाता है. कवि

कालिदास जिस वृक्ष की डाल पर बैठे थे, उसे ही काट रहे थे. सरस्वती की कृपा हुई तो महाकवि बन गए. जहां तक सरपंच नील देसाई की बात है, वह मंदमति नहीं, बल्कि विद्वान और उच्च विद्या विभूषित हैं. उन्होंने 1991 में 12वीं की परीक्षा में फेल हो जाने के बाद 10वीं के प्रमाणपत्र के आधार पर डिप्लोमा इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग किया. 2005 में नियम बना कि डिप्लोमावाले डिग्री की पढ़ाई कर सकते हैं, तो देसाई ने बीएससी फिर एमएससी किया और बाद में थीसिस लिखकर पीएचडी की डिग्री भी हासिल कर ली. उनके मन में अब भी कसक है कि 26 बार परीक्षा देकर भी वह 12वीं पास नहीं कर पाएं, इसलिए अगले वर्ष 27वीं बार परीक्षा देंगे.

हमने कहा, जब डॉक्टरेट हासिल कर ली, तो 12वीं की परीक्षा देने में कौन-सा तुक है? नील देसाई यूजलेस काम कर रहे हैं. जब हिमालय पर चढ़ गए तो टेकड़ी पर चढ़ने की जिद क्यों? हवाई जहाज के पायलट को मारुति 800 चलाना सीखने की क्या जरूरत ?

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, यह देसाई की धुन या लगन है. 12वीं की परीक्षा को लेकर उनके मन में गीत गूंज रहा है- हम होंगे कामयाब एक दिन !

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11953

- डॉ. सागर खादीवाला

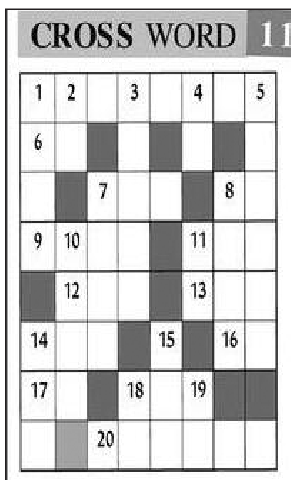

बाएं से दाएं

1. यज्ञोपवीत संस्कार 6. जागने की क्रिया, भाव या अवस्था,जागरण 7. स्त्री, औरत8. लुहार का बड़ा हथौड़ा, लंबाई-चौड़ाई और मोटाई तीनों का विस्तार 9. नाटक अथवा नटों जैसा नाटक संबंधी 11. वह काल्पनिक पत्थर जिसका स्पर्श लोहे को सोना बना देता है 12. तमगा 13. नष्ट, बर्बाद 14. केवल, मात्र 16. रण, युद्ध, जंगल 17. वृक्ष का नीचे वाला भाग जिसमें डालियां नहीं होतीं 18. वह स्थान या श्मशान जहां पशु-पक्षियों के भक्षण के लिए शव फेंक दिए जाते हैं (सं.) 20. जिसकी आंखें अश्रुपूर्ण हों

ऊपर से नीचे

1. ध्वस्त करना, नष्ट करना 2. पैर, पांव, डग 3. अचानक, सहसा 4. जोड़, मेल, सुलह 5. जीवन व्यतीत करने और काम करने का ढंग 7. श्रद्धा, आस्था (उर्दू) 8. गृहस्थी, निवास स्थान10. बूंद-बूंद करके गिरना, पके हुए फल का अपने आप गिरना 11. गिरने या गिराने का भाव या क्रिया, पता14. इस्लाम के धर्मगुरू का आदेश15. एक बड़ा वृक्ष जिसमें लाल फूल आते हैं जिनके डोड़ों में गूदे के स्थान पर रुई होती है 18. वर्तमान दिन, जो दिन बीत रहा है 19. कण, अन्न एक दाना, कान का समास में व्यवहृत संक्षिप्त रूप

Solution 11952

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ मेंशिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, आकस्मिक धन लाभ का योग है, वर्ष के मध्य में व्यापार में लाभ प्राप्त होगा, शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा, वर्ष के अन्त में शारीरिक कष्ट होगा, मित्रों से व्यर्थ विवाद होगा, स्थानान्तरण का योग है, मानसिक तनाव में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ में मित्रों का विवाद हो सकता है, कर्क राशि के व्यक्तियों का शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को आकस्मिक धन प्राप्त होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मानसिक तनाव रह सकता है, स्थान परिवर्तन का योग है, सिंह राशि के व्यक्तियों को राजकीय सहयोग मिलेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर सुशील मिलनसार और न्यायप्रिय होगा, भूमि भवन मकान आदि का सुख रहेगा. नौकरी आदि में सफलता मिलेगी. माता का भक्त होगा. जन्म स्थान से दूर भाग्योदय होगा.

मेष- कामकाज निपटाने के लिये किसी के सहयोग की जरूरत होगी. लाभ होने का योग है. यात्रा आदि का योग प्रबल रहेगा. प्रयत्नों में सफलता मिलेगी.

वृषभ- दूसरों को अपने व्यक्तिगत मामलों में दखल का अवसर न दें. परिश्रम की अधिकता बनी रहेगी. सुखद अनुभवों की प्राप्तिहोगी.

मिथुन- भौतिक सुख सुविधा में बढ़ोत्तरी संभव है. कार्य क्षेत्र में आपका प्रभाव व बर्चस्व बढ़ेगा. स्त्री जाति की सलाह उपयोगी सिद्ध होगी. आर्थिक कार्यो में सुधार होगा.

कर्क- कुछ लोग आपसे नजदीकी का लाभ उठाने की कोशिश कर सकते हैं. व्यवसायिक क्षेत्र में सुधार होगा. अतिथि रावणमन का योग है. संयम से कार्य करें.

सिंह- रूकी योजनाओं में गति देने में सफलता मिलेगी. पारिवारिक परेशानी दूर होगी. हितकारी लाभदायक योजनायें बनेंगी. उत्साह बना रहेगा.

कन्या- कैरियर में आ रही बाधा दूरी होंगी. कम लाभ में भी संतोष रहेगा. उचित मार्गदर्शन मिलेंगे. थोडे लाभ में भी संतोष रहेगा. मित्र आपकी मदद करेंगे.

तुला- स्वास्थ्य में उतार चढाव बना रहने से सेहत बिगड़ सकती है. मामूली बात पर मित्रों से कहासुनी होगी. मानसिक प्रसन्नता होगी.

वृश्चिक- आपके सहज स्वाभाव का लोग गलत फायदा उठाने का प्रयास कर सकते हैं. निकट संबंधियों का सहयोग रहेगा.मनचाही सफलता मिलेगी. कामकाज पूरा होगा.

धनु- आपका कड़ा व्यवहार घर में कलह का कारण बन सकता है. विद्या पक्ष में उन्नति होगी. कामकाजी महिलाओं को अच्छी सफलता का योग है.

मकर- आकस्मिक विस्तार की संभावना को बल मिलेगा. कामकाज की देरी से खिन्नता होगी. कोर्ट कचहरी के कार्यो में यथेष्ठ सफलता मिलेगी.

कुम्भ- आप किसी बात को लेकर भयभीत हो सकते हैं. मित्रों का साथ रावणे बढ़ने की हिम्मत देगा. परिश्रम अधिक रहेगा. किसी विशिष्ट व्यक्ति से सहयोग मिलेगा.

मीन- मित्रों से किया गया वादा निभाना मुश्किल होगा, नए काम की तलाश में सफलता मिलेगी. कामकाज के प्रति उत्साह बना रहेगा. व्ययभार की अधिकता रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

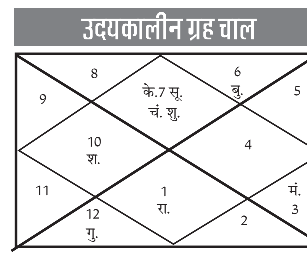

पंचांग

रा.मि. 14 संवत् 2082 आषाढ़ शुक्ल दशमीं शनिवासरे शाम 6/28, स्वाती नक्षत्रे रात 8/18, सिद्ध योगे रात 9/46, तैतिल करणे सू.उ. 5/14 सू.अ. 6/46, चन्द्रचार तुला, शु.रा. 7, 9, 10, 1, 2, 5 अ.रा. 8, 11, 12, 3, 4, 6 शुभांक- 9, 2, 6.

व्यापार भविष्य

आषाढ़ शुक्ल दशमीं को स्वाती नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, पीपल खांड़ गेहूँ, सूत, जौ, चना, तिल, तेल, में तेजी होगी. वायदा विचार आज शेयर बाजारों के रूख पर व्यापार करना लाभदायक रहेगा. भाग्यांक 2559 है.

SUDOKU 7085

		9		5		2		4
4	5				9	7	1	8
				7			5	3
	8	2	7		5			6
1	3			4			7	2
5			1		2	8	3	
8	4			9				
3	6	1	2				9	5
2		5		1		6		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7084

7	8	6	4	1	3	5	9	2
5	9	4	7	8	2	1	6	3
1	2	3	6	9	5	7	4	8
9	3	8	2	6	1	4	7	5
2	7	5	8	4	9	6	3	1
6	4	1	5	3	7	2	8	9
3	5	9	1	7	4	8	2	6
8	1	7	9	2	6	3	5	4
4	6	2	3	5	8	9	1	7